निमिषा सिंघल

माटी

गाँव की माटी में लोटते नन्हें मुन्ने बच्चों की फौज देख अलख उन बच्चों की तरफ खिंचा चला गया। अपना डिजिटल कैमरा निकाल कर वह उनके हर अंदाज में फोटो ले लेना चाहता था उनका आपस में उलझना, लड़ना, हँसना, खिलखिलाना सब कुछ वह अपने कैमरे में कैद कर लेना चाहता था। उन्हें मिट्टी में इस तरह क्रीड़ा करते देखना उसे मानसिक सुकून दे रहा था और उसे उसका बचपन याद दिला रहा था कि किस तरह वह भी अपने दोस्तों के साथ मिट्टी में घंटों खेलने रहता था न धूप की चिंता न घर जाने की न ही खाना खाने की बस खेल बावड़ा हो दोस्तों के साथ मस्ती किया करता।

वह गाँव भर का डाकिया बना रहता पहले फोन नहीं होते थे गाँव में सभी ताई, ताऊ,चाचा, चाची, अम्मा, बाबा, हुआ करते थे अगर किसी को किसी से कुछ सामान मंगवाना है तो अलख को आवाज दी जाती थी अपने मोहल्ले भर के लोगों का सामान वह अपनी साइकिल से लाकर दे देता था। गाँव के सभी लोग उसे बहुत पसंद करते थे।

बारिश के दिन थे मिट्टी में खेलते-खेलते एक दिन वह और उसके सभी दोस्त कीचड़ में फँस गए। उस दिन को याद करके उसे अचानक हँसी आ गई की किस तरह काली कीचड़ में से वें लोग बड़ी मुश्किल से अपनी शर्ट उतार कर उसकी रस्सी बनाकर बाहर निकल पाए थे और घर पर जाकर खूब कस के डाँट पड़ी थी। माँ ने तो हाथ में सोटा तक निकाल लिया और कहा, "खबरदार जो निकम्मे दोस्तों के साथ फिर खेलने गया मैं नहीं साफ कर पाऊँगी कीचड़ से सने ये गंदे कपड़े जा खुद ही जाकर धो"।

फिर जैसे ही वह धोने चला तो उसकी शर्ट हाथ से ले धोने चली गई ऐसी ही होती है माँ पहले गलती होने पर खूब डाँटेगी और फिर बाद में लाड़ दिखाएगी।

गाँव में पहले यह भी प्रचलित था की कोई भी चोट लग जाने पर मिट्टी उस घाव पर लगा देते थे ऐसा करने से वाकई कुछ समय बाद घाव ठीक भी हो जाता था।

वैसे भी मिट्टी में गिरकर चोट लगती थी और उस घाव पर अपने आप ही मिट्टी लग भी जाती थी और खेल में पता भी नहीं चलता था की दर्द हो रहा है। आधी से ज्यादा चोट तो घर पहुंचने से पहले ही सूख चुकी होती थी। बाकी काम अम्मा की करारी डाँट वाला मलहम और बाद में उनका लाड़ पूरा कर देता था।

गाँव के स्कूलों में पढ़कर बहुत बच्चे बड़े-बड़े अधिकारी भी बने कुछ किसान कुछ व्यापारी बन अपनी-अपनी आजीविका चला रहे थे।अलख भी एक अखबार के दफ्तर में जर्नलिस्ट था।

व्यस्क होने के बाद कीचड़ का एक छींटा भी पड़ जाता था तो मन में अजीब सा लगता था लेकिन आज गाँव में आकर खुद ही मिट्टी में आकर बैठने और कीचड़ में लिपटने का मन कर रहा था लग रहा था कि सारे दोस्त फिर से मिल जाएँ और हम पहले की तरह फिर से वैसे ही माटी से खेल करें। तभी अलख को अपना एक पुराना दोस्त विराट सामने से आता दिखाई दिया अचानक उसकी मन शरारत से भर उठा उसने आवाज लगाई विराट.....विराट...

वह भी उसे देखकर आश्चर्य मिश्रित खुशी से भर उठा। और उससे लिपटने भागा। अलख ने गाँव की मिट्टी उठाई उसे सूंघा उसकी सौंधी- सौंधी सुंगध को अपनी स्वांस में भर धमनियों में कैद कर लेना चाहता था फिर उसने माटी को माथे से लगाया फिर अपने दोस्त विराट के गालों पर लगाकर गले मिला। दोनों दोस्तों की ऑखें नम हो उठी।

हम माटी की सुगंध भूल भी जायें लेकिन माटी हमें कभी नहीं भूलती हर बार उतने ही स्नेह से गले लगाती है जैसे पहली बार लगाया था।

अलग ने एक कागज के पैकेट में माटी को भर अपने बैग में रख लिया और चल पड़ा अपने दोस्त के घर माटी के चूल्हे में बनी भाभी के हाथ से बनी रोटियां खाने।